2019-2020

Power of Knowledge Peer Review Journal,Volume : III, Issue : I Apr.to Jun.2019 ISSN 2320-4494 Impact factor 2.7286

RNI No. MAHAUL03008/13/1/2012-TC

POWER OF KNOWLEDGE

An International Multilingual Quarterly Peer Review Refereed Research Journal

Editor
Dr. Sadashiv H. Sarkate

• **Mailing Address** •

Dr. Sadashiv H. Sarkate
Editor : POWER OF KNOWLEDGE
Head of Dept. Marathi
Art's & Science College, Shivajinagar, Gadhi, Tq. Georai Dist. Beed-431 143 (M.S.)
Cell. No. 9420029115 / 7875827115
Email : powerofknowledge3@gmail.com /
shsarkate@gmail.com

Price : Rs. 300/-
Annual Subscription: Rs. 1000/-

अनुक्रमणिका (Index)

अ.क्र.	प्रकरण	संशोधक	पृष्ठ क्रं.
1	Screen Time And Behavioral Problems	Dr.Aparna Ashtaputre-Sisode	1
2	"A Study of Mental Health and Anxiety among Maharashtra State Government Servant"	Dr. Ravindra Ramdas Shinde	5
3	A Mathematical Programming Approach for Sugarcane Harvesting in	Dr.Borkar v.c. Prof.Thorat Haunmant	9
4	Importance of Therapeutic Yoga for the hassle-free life.	Sandeep D Satonkar	13
5	Organic Farming: Introduction	Dr. AcholePandurang Bapurao	16
6	The Effect of Family Structure on College Students in Relation to Emotional Maturity and Loneliness	Dr. V.D. Kasture	20
7	'घर गेलं वाहून' कथा एका शिक्षकाच्या संघर्षमय जीवनाची	डॉ. सोपान माणिकराव सुरवसे	23
8	मराठी साहित्यातील सौंदर्यशास्त्र : एक चिकित्सक अभ्यास	प्रा.डॉ. व्यंकट दि.कोरेबोईनवाड	26
10	आधुनिक हिंदी नाटक में दलित चेतना	प्रा. डॉ. आबासाहेब राठोड	29
11	वैश्वीकरण और हिन्दी उपन्यास : 'कितने पाकिस्तान' के विशेष सन्दर्भ में	डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्थ'	32
12	स्त्री संत चळवळीतून स्त्रीवादाची जडण-घडणछ"	डॉ.राजेंद्र धाये, डॉ.सखाराम पंढरीनाथ टकले	39
133	हैदराबाद स्वातंत्र्य संग्राम : महाराष्ट्र परिषदेचे पहिले अधिवेशन	डॉ.राजेंद्र धाये, डॉ.सखाराम पंढरीनाथ टकले	41
14	यशवंतराव चव्हाणांचे द्विभाषिक राज्यासंबंधी विचार	प्रा. डॉ. आर. व्ही. मस्के	45
15	जलव्यवस्थापन आणि कृषी विकास	डॉ.ए.बी.पवार	47
15	लोकसाहित्याच्या आधुनिक अभ्यासपद्धतीविषयी	शिवाजी जनार्धन विसपुत	51
16	लिंगभाव जाणीव आणि स्त्री हिंसाचाराचे विविध आयाम	डॉ. स्नेहलता मानकर	54
17	वसतिगृह चळवळ : प्रासंगिकता आणि वास्तव एक अभ्यास	प्रा. डॉ. कालिदास भांगे	62
18	आधुनिक प्रसारमाध्यमे आणि मराठीचे वर्तमान स्वरूप	डॉ.वैशाली श्रीकृष्ण भालसिंग	71
19	Mathematical approach of Transportation of sugarcane in Maharastra	Prof. H.P. Thorat Dr.V.C. Borkar	74

आधुनिक हिंदी नाटक में दलित चेतना

प्रा. डॉ. आबासाहेब राठोड
शोधनिर्देशक, सहयोगी प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, चौसाळा

दलित शब्द मराठी से हिंदी में प्रचलित हुआ है। मराठी साहितय में भी दलित साहित्य के संदर्भ में दो विचारप्रवाह प्रचलित है। प्रथम यह कि दलितों द्वारा लिखा साहित्य ही दलित साहित्य है तो दूसरा अन्य साहित्यकारों द्वारा दलितों पर लिखित साहित्य भी दलित साहित्य के अंतर्गत आता है। हिंदी में यह समस्या नही है । मराठी साहित्य में महात्मा फुले और आंबेडकर के रुप में चिंतन के केंद्र में दलित आया। सन 1971 ई. में महाड में आयोजित द्वितीय महाराष्ट्र बौध्द साहित्य संमेलन में बाबुराव बागुल ने सर्वप्रथम दलित साहित्य को व्याख्यायित किया।

हिंदी साहित्य में प्राय: सभी विधाओं दलित चेतना पर सर्जन हुआ है। हिंदी नाटय साहित्य में साहित्य की अन्य विधाओं की तुलना में दलित चेतना पर कम लिखा गया है। हिंदी नाटकों ने जातिभेद निर्मूलन, साधारण समाज से अर्तजातिय विवाह, रोटी-बेटी व्यवहार आदि का चित्रण कर अन्याय के विरुध्द आवाज उठाई है। दलित नाटकों का निर्माण महात्मा बुध्द, महात्मा फूले, शाहू महाराज और आंबेडकर के दर्शन और विचारों से हुआ है। वह नाटक रुढि परंपराओं, शोषण, विद्वेष, असमानता आदि पर प्रहार करता है। "हिंदी दलित नाटय-साहित्य में दलितों की कोमल भावनाओं को किस तरह ठेस पहुँचाई जाती है, कभी कभी इस संघर्ष एवं कष्ट से निराश होकर कुछ दलित आत्महत्या कर लेते है, इसे चित्रित करके यथार्थ स्थिति को महत्व दिया है।"

वर्णाश्रम व्यवस्था के कारण भारतीय समाज में चतुर्थ वर्ग को हमेशा शोषण का शिकार होना पडता है। इन दलितों की जाति-पाति, उँव-नीच, बेकारी की प्रथा, लैगींक शोषण विकास सुविधा का अभाव आदि समस्याओं से जूझना पडता है। नाटककारों ने अपने नाटकों मे दलितों की इसी समस्या का चित्रण कर दलित नायक -नायीका को इसके विरोध में विद्रोह करते दिखाया है। भीष्म साहनी ने 'कबीरा खडा बाजार में' ऐसी वर्ण व्यवस्था का विरोध किया है। नाटक में वे कायस्थ के चरित्र के माध्यम से बताना चाहते है कि, यह समस्या आज वर्तमान समय में कहाँ तक फैली हुई है। कायस्थ कोतवाल से कहता है, "इससे धर्म की मर्यादाएँ टूटेंगी, जॉत-पाँत के नियम टूटेंगे। हमने सूना है वह बीमारी काशी में नहीं फूटी है। देश के और स्थानों मे भी फूट रही है। कुम्मीकमी इकठ्ठा हो रहे है।" इस वर्ण व्यवस्था का शिकार हमारी निचली और पिछडी जातियाँ होती है। जिनके कारण उनको न तो ठीक से शिक्षा मिलती है न ठीक से खाना। नाटककार शंकर शेष ने 'एक और द्रौणाचार्य' नाटक के द्वारा शिक्षा व्यवस्था में व्याप्त उच्च नीच का वर्णन किया है। नाटक का पौराणिक द्रौणाचार्य एकलव्य को बतात है, " ठिक ही किया था । शास्त्रों के अनुसार मेरी विद्या केवल ब्राम्हणों और क्षत्रियों के लिए है।'

वर्ण व्यवस्था के साथ - साथ पनपती एक पुरानी छुआछूत की समस्या समाज में आजतक मौजूद है। दलित नाटको में इस समस्या चित्रण किया है। "त्रिशंकू" नाटक में ब्रजमोहन शाह ने ज्योतिषी के माध्यम से व्यंग किया है, "धर्मनिरपेक्ष देश में छुआछूत को बनाये रखना।"

दलित स्त्रियों का लैंगीक शोषण होता है। बलात्कार की अधिकांश घटनाएँ गरीब, मजदूर, दलित, आदिवासी स्त्रियों के साथ ही होता है। इस बलात्कार का महत्वपूर्ण कारण यह है कि सवर्ण, सामंत अपनी जातिय श्रेष्ठता और उच्चता के दंभ में चूर होते है और दलित स्त्रियों के साथ उनके बलात्कार का उद्देश्य केवल कामोत्तेजना की पूर्ति ही नही होता अपितु जैसा की कहा जाता है किसी जाती का स्वाभीमान तोडना है तो किस जाति के स्त्रियों का बलात्कार करना महत्वपूर्ण माना जाता है। ऋषीकेश सुलभ का नाटक 'अमली' में जिला सिवान मनरौली गाँव की एक हरिजन परिवान की बहू अमली का चरित्रांकन है। इस नाटक में एक निम्न वर्गीय मजदूर की स्थिति, वंश-दर-वंश गुलामी का सिलसिला और कर्ज के बोझ तथा भूमि के टुकडों के एवज में अनन्तकाल तक बाध्य होकर मालिक के यहाँ मजदूरी करने की अभिशप्त स्थिति, साथ ही परिवार की महिलाओं का शारीरिक शोषण और मूक्ति की तलाश में पूरे परिवार को बन्धूआ आम मजदूर की स्थिति से मुक्ति दिलाने की आकांक्षा और संकल्प के साथ परदेश गए पति का वही रम जाना, वापस न आना और यहाँ पत्नी का आर्थिक कठिनाईयों से गुजरते हुए जीवन रक्षा तथा उदर पूर्ती के लिए कभी एक मालिक की नियति और उसका एक आतंककारी परिवेश है। "कथा में एक अनिवार्य तनाव के द्वारा हमारे सामाजिक विद्रुप चेहरों की परत दर परत उघडती है और हमारे समय तथा समाज को जटिल विडम्बनापूर्ण स्थितियों को बडी बेचैनी तथा तलखी के साथ सघनरुप से यह कृति एहसास कराती है।"

कोर्ट मार्शल नाटक दलित चेतना की दृष्टि से महत्वपूर्ण नाटयकृति है। यह नाटक हमारी समकालीन व्यवस्था के छिपे अनावृत्त चेहरों को करता है। जो लोग व्यवस्था की आड में निम्न वर्ग का बेरहमो से शोषण करते है। "कोर्ट मार्शल सदियों से तथाकथित छोटी जाति पर उँची जाती वालों द्वारा किया जानेवाले बहुस्तरीय अन्याय, अत्याचार, अपमान और शोषण के विरुध्द सहनशील और अनुशासन के बांध तोडकर विद्रोह कर उटने वाले सेना के मामूली जवान रामचंदर के खिलाफ चलाए गए मुकदमें (कोर्ट मार्शल) की ऐसी दिलचस्प और उत्तेजक नाटयकथा है जो अंतत: एक रुपक या मैटाफर का स्तर प्राप्त कर लेती है।"

गोविंद चातक का नाटक काला मुँह मे पर्वतीय ग्रामीण क्षेत्र में रहनेवाले गरीब, मजदूरों, दलितों और हरिजनों का चित्रण है। ना इसमें एक हरिजन दंम्पति के माध्यम से स्त्रीपुरुष संबंन्ध की एक नेई व्याख्या की गई है। उनके जीवन की कुच्छ घटनाएँ उनकी विवशता, हताशा आदि के साथ उच्च वर्ग की मनमानी और उनके द्वारा होनेवाले दलितों का शोषण दिखाया है। दूधनाथसिंह के नाटक 'यमगाथा' मे देव संस्कृति के आतंक से जनता दीन-हीन हुई है। जनता को अग्नी से वंचित रखा गया है। सामान्य जनता हमेशा अभाव तथा पीडा का जीवन व्यतित करती है। ऐसे ही शोषित पीडित, उपेक्षित जनता का प्रतिनिधी है पुरुरवा वह सडी-गली रुढियों का विरोध कर उनका विध्वंस करना चाहता है। उसका यह प्रयास है कि शोषित पीडित जनता को उनका अधिकार तथा न्याय प्राप्त हो। शंकर शेष का नाटक पोस्टर भूमिहीन किसानों पर जमीदार और वनाधिकारी द्वारा किये जानेवाले अत्याचार की कहानी है। नाटक में उच्च वर्ग साम दाम दण्ड भेद का

आधार लेकर मजदूरो का शोषण करता है। पोस्टर यहाँ प्रतिक के रुप में है। आधुनिकता नई संस्कृति तथा सभ्यता के सारे उपादान पटेल और उसके मेहमानों जैसे उच्चवर्णीय तथा शोषकों के लिए है। जमींदार ठेकेदार और वनाधिकारी के अत्याचार, दलित, शोषित, आदिवासियों को निरंतर सहने पडते है। धन, सत्ता और छल से ये लोग निम्न वर्गीय लोगो पर अपना अधिपत्य बनाए रखते है। आदिवासियों की धर्माधता, अशिक्षा ने आदिवासियों को अपाहिज बना दिया है। इसीलिए उनकी मजबूरी, हताशा, गरीबी तथा बेकारी का नाजायज फायदा उठाकर उच्चवर्गीय लोग निम्न वर्गीय लोगों पर निरंतर अन्याय, अत्याचार करते रहते है।

निष्कर्ष रुप में कहा जा सकता है कि धर्म, रुढी परंपराओं तथा वर्ण व्यवस्था के नामपर हजारो सालों से दलितों पर अन्याय होता आया है। उनका अपमान और शोषण होता आया है। शाहू-फुले आंबेडकर के विचारों से प्रेरणा लेकर दलितों ने अपने उपर हो रहे अन्याय के विरोध में आवाज उठाना प्रारंभ किया । जिसका चित्रण हिंदी नाटय साहित्य में भी दिखाई देता है। इन नाटककारों ने दलितो की व्यथा और वास्तविकता का चित्रण अपने नाटकों में किया है। इसमें शकर शेष का पोस्टर, एक और द्रोणाचार्य, बाढ का पानी, चेहरे, राक्षस, स्वदेश दिपक के नाटक कोर्ट मार्शल, जलता हुआ रथ, गोविंद चातक के नाटक काला मुँह, ऋषीकेश सूलभ का अमली, दूधनाथसिंह का यमगाथा, ब्रजमोहन शाह का त्रिशंकू, भीष्म साहनी का कबीरा खडा बाजार में आदि नाटकों मे दलित चेतना की अभिव्यक्ती हुई है।

संदर्भ संकेत :-

1) दलित साहित्य - (वार्षिकी) 2005 शीलबोधी का लेख पृ. 50
2) भीष्म साहनी - कबीरा खडा बाजार में पृ. 284
3) शंकर शेष - एक और द्रोणाचार्य पृ. 50
4) शंकर शेष - त्रिशंकु पृ. 30
5) स्वदेश दीपक - कोर्टमार्शल
6) जयदेव तनेजा - हिंदी नाटक आजतक पृ. 140

2019-2020

ISSN - 2348-2397
APPROVED UGC CARE

SHODH SARITA

SHODH SARITA
Vol. 7, Issue 25, January-March, 2020
Page Nos. 186-189

AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

प्रगतिशील साहित्य में दलित विमर्श : एक मूल्यांकन

डॉ. आबासाहेब राठोड*

शोध सारांश

भारत में जाति व्यवस्था के फलस्वरुप उसके द्वारा की गयी सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं मानसिक रचना के परिणाम स्वरुप भारत के साहित्यिकों का बोध जितना प्रखर होना चाहिए था, उतना प्रखर भी नहीं रहा समाज का प्रतिबिंब ही साहित्य में झलकता है। समाज में जो उत्थान, पतन, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक क्षेत्र में परिवर्तन होते रहते हैं, उसका प्रभाव साहित्यकार और प्रकारान्तर से साहित्य पर पड़ता है। दलित साहित्य का इतिहास बहुत पुराना है वर्तमान दलित साहित्य उसी क्रांति की संतान है, जो बहुत पहले संत साहित्य के रुप में आरंभ हो चुकी थी। दलित साहित्य आज जो निषेध और नकार की भाषा बोलता है, उसके बीच कई वर्षों पहले संत साहित्य में अंकुरित हो गये थे।

Keywords : सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक क्षेत्र, जनपक्षधरता, प्रासंगिक, विषम परिस्थिति, सत्तापक्ष का विरोध, जनमानस का समर्थन

दलित शब्द की उत्पत्ति संस्कृत धातु दल से हुई है जिसका अर्थ है तोड़ना, हिस्से को कुचलना आदि दलित शब्द का अर्थ है दारिद्र, गया बीता और बहुत ही निम्न कोटि का / दुसरे शब्दों में कहा जाए तो दलित याने दलन किया हुआ, गिरा हुआ आदि दलित विमर्श का सामान्य अर्थ पीड़ित शोषित, दबाए गए लोगों में अपने अधिकारों के प्रति सजगता एवं जाग्रति से है दलितों के बारे में किया गया विचार ही दलित विमर्श कहलाता है सदियों से आ रही सामंती परम्परा व सामाजिक विसंगतियों की दीवार को ढहाकर स्वाभिमान के महल का निर्माण करना दलित विमर्श का ही परिणाम है। व्यक्ति जब आन्तरिक व बाह्य रुप से चेतनशील बन जाता है तब वह अस्तित्व की पंहचान को सार्थक बनाने में समर्थ हो जाता है। दलित विमर्श के संदर्भ में दलित व्यक्ति जब शोषणों व अत्याचारों से ऊबकर सामांजिक कुप्रथाओं के बाहर निकलकर एक सभ्य समाज की कल्पना करता हुआ मान सम्मान व स्वाभिमान से जीना चाहता है तो यह उसके मन का विमर्श कहलाता है। दलित विमर्श को समझने से पूर्व भारतीय समाज अवस्था के बारे में समझना जरुरी है। उसका कारण यह है कि दलित विमर्श वर्ण व्यवस्था के तहत समाज को चार वर्गों में ब्राम्हण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र में विभक्त किया गया है। कालान्तर में शूद्र दो वर्गों स्पर्श एवं अस्पर्श में विभक्त हो गया। इसमें अस्पर्श अर्थात दलित जाति को समाज में सबसे निम्न स्थान प्राप्त हुआ दलित विमर्श इस वर्णव्यवस्था का पुरजोर विरोध करता है इसलिए यह कहा जाता है कि वर्णव्यवस्था के तहत प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष दमन शोषण अत्याचारों के विरोध की चेतना ही दलित विमर्श कहलाती है।

"दलित साहित्य कालजेयी साहित्य है। न्यायपरक, सम्मानजनक स्थितियों वाले समाज की संरचना करते हुए अपने मिशन को चुनौती के रुप में स्वीकार करते हुए लक्ष्य प्राप्त करने तक संघर्ष करते रहने के लिए प्रयासरत है। आज के संदर्भ में जिसे हम दलित साहित्य कहते हैं। वह उसी छटपटाहट का प्रतिफलन है। उसका उदगम सर्वप्रथम सन साठ के आसपास मराठी साहित्य में हुआ और उसकी जडें अम्बेडकरवादी विचार में तलाशी जा सकती है" ।१ सन १९२० के बाद का समय भारत में कई तरह के नये विचारों के विस्तार का समय है। अम्बेडकरवादी विचार भी उसी समय कम से दलित वर्ग के लिए छोटे से हिस्से तक पहुँचने लगे थे। अम्बेडकर का विचार था कि भारत में सारी सामाजिक गड़बड़ी की जड़ वर्ण व्यवस्था है। उसे समाप्त किए बिना न तो जातिवाद समाप्त किया जा सकता है और न छुआछूत। इसलिए उन्होंने प्रारंभ से ही वर्णव्यवस्था के खिलाफ मुहिम छेड़ी थी लेकिन वे यह भी जानते थे कि वर्णव्यवस्था की जड़े बहुत गहरी हैं। उसे इतनी आसानी से उखाड़कर नहीं फेका जा सकता है! इसीलिए आज यह प्रश्न उपस्थित हुआ है कि. साहित्य को किस का विचार करना चाहिए, किसे अपने विचार का केंद्र बनाना चाहिए। इस विचार के पीछे यही उद्देश रहा कि विषमतापूर्ण रचना को व्यक्तिगत स्तर पर भी विद्रोह का धक्का न लग सके।

*प्रोफेसर – हिंदी विभाग प्रमुख एवं शोध निर्देशक, नवगण शिक्षण संस्था, राजुरी (न.) संचलित, कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, चौसाळा,ता.जि. बीड.

भारत में जाति व्यवस्था के फलस्वरुप उसके द्वारा की गयी सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं मानसिक रचना के परिणाम स्वरुप भारत के साहित्यिकों का बोध जितना प्रखर होना चाहिए था, उतना प्रखर भी नहीं रहा। समाज का प्रतिबिंब ही साहित्य में झलकता है। समाज में जो उत्थान, पतन, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक क्षेत्र में परिवर्तन होते रहते है, उसका प्रभाव साहित्यकार और प्रकारान्तर से साहित्य पर पड़ता है।

दलित साहित्य का इतिहास बहुत पुराना है। वर्तमान दलित साहित्य उसी क्रांति की संतान है, जो बहुत पहले संत साहित्य के रुप में आरंभ हो चुकी थी। दलित साहित्य आज जो निषेध और नकार की भाषा बोलता है, उसके बीच कई वर्षो पहले संत साहित्य में अंकुरित हो गये थे। "साहित्य मूलतः एक मानसिक क्रिया, एक सर्जनात्मक और आत्मचैतन्य उद्यम माना जा सकता है। यद्यपि वह इस अर्थ में सामाजिक रुप से आकार ग्रहण करता है कि लेखक प्रचलित बौद्धिक इतिहास का अंग होता है, अपने साथ के लोगों की भाषा, प्रवृत्तियों और मर्जी का भागीदार होता है और उन मूल्यों को व्यंजित करता है, जो समाज राष्ट्र या युग के किसी अन्वेषणीय संदर्भ में प्राप्त होता है।"२

कुछ विद्वानों ने दलित न होकर दलितों के सम्बन्ध में लिखे गए। साहित्य को दलित साहित्य मानते हैं तो कुछ दलित साहित्यकारों के द्वारा दलित समाज के लिए लिखे गए साहित्य दलित साहित्य मानते हैं किन्तु इसमें कोई दो राय नहीं है कि जिस साहित्य में दलित जीवन की अभिव्यक्ति हो वही दलित साहित्य है। दलित विमर्श का जिस तरह राजनीतिक विकास हुआ, उस तरह साहित्यिक विकास नहीं हुआ। साहित्य में हम तीन धाराओं को देख सकते है। पहली धारा स्वयं दलित जातिओं में जन्में लेखकों की है जिनके पास स्वानुभूतियों का विराट संसार है। दूसरी धारा हिन्दू लेखकों की है जिनके रचना संसार में दलितों का चित्रण सौंदर्य सुख की विषय वस्तु के रुप में होता है तीसरी धारा प्रगतिशील लेखकों की है, जो दलित को सर्वहारा की स्थिति में देखते हैं हिंदी साहित्य में इन तीनों धाराओं का उदय एक साथ नहीं हुआ। हिन्दु धारा के साहित्य में दलित विमर्श राष्ट्रीय आंदोलन की देन है। स्वतंत्रता–संग्राम के दौरान जब दलित मुक्ति का प्रश्न उठा और पूना क्ट के बाद जब गांधीजी ने अछूत के उद्धार के लिए काम किया तो हिन्दू साहित्यकारों का भी इस समस्या की ओर ध्यान गया।

तेरहवीं शताब्दी में संतो का युग शुरु हुआ जिन पर सिद्धों और नाथ योगियों का प्रभाव साफ दिखाई देता है। इन संतो ने निर्गुण भक्ति के माध्यम से सामाजिक असमानता, जात–पात, ऊँच–नीच, भेदभाव, कर्मकाण्ड और ब्राह्मणवाद पर सीधी चोट करते हुए समानता, सद्भावना और भाईचारे पर जोर दिया। इस सम्बन्ध में महाराष्ट्र में जहाँ संत नामदेव, संत एकनाथ, संत तुकाराम, समर्थ रामदास, चोखामेला, हिंदी में अपनी रचनाएँ की, वहीं पर उत्तर भारत में कबीर, रविदास, गुरुनानक, दादू पलटूदास, सुन्दरदास, रज्जब आदि संतो ने सरल भाषा में मूर्तिपूजा, अवतारवाद, पाखण्डवाद, बाह्य अडम्बर की खुलकर बुराई की संतो के विचारों में दलित जाति को प्रेरणा मिली और उनमें आत्मविश्वास जागृत हुआ। ३

गुरुनानक देव से लेकर सिखों के दसवें गुरु गोविंद सिंह ने ब्राह्मणवाद कर्मकाण्ड और मानवीय भेदभाव के खिलाफ बानी लिखकर संतो के कार्यों को आगे बढ़ाया। गुरुनानक देव जी तो जात–पात की नींव उखाड़ते स्वंय कहते हैं–

"नीचा अन्दर नीच जात, नीची हूँ अति नीच
नानक तिनके संग साथ, बढ़िया जो किया रीस "४

प्रगतिशील साहित्य भी लगभग इसी काल में अस्तित्व में आया। प्रेमचंद इस धारा के अत्यन्त सशक्त लेखक थे। डॉ. अम्बेडकर के दलित आन्दोलन और गांधी जी के अछूतोंब्दार कार्यक्रम दोनों का उनके जीवन पर काफी असर पड़ता था साहित्य में दलित विमर्श प्रगतिशील आंदोलन के उद्भव के बाद का ही है। इस परम्परा का क्रमबद्ध विकास होता रहा हैं। इस प्रगतिशील विचार धारा का उदय वर्ण व्यवस्था के जन्म के साथ ही प्रतिरोध के रुप में हुआ है। संत कबीरदास ने इस धारा को एक नई ऊर्जा दी है।

"दस अवतार निरंजन कहिए
सो अपना न कोई "५

साथ ही साथ दलित संतों के युग को आध्यात्मिक विद्रोह का युग भी माना जा सकता है। संतों ने उन तमाम आध्यात्मिक मूल्यों से विद्रोह किया, जो मनुष्य मनुष्य के बीच भेद करते थे। वे सामाजिक समता के साथ साथ आर्थिक समता भी चाहते थे निम्न दोहों में संत कवि रैदास ने अपने भाव प्रकट किये हैं–

"बाभन को मत पूजिए जो हो गुण से हीन
पूजिए चरण चण्डाल के, जो गुनज्ञान प्रदीन।"६

प्रगतिशील साहित्य का उदय १९३० के दशक में हुआ उसका विधिवत नामकरण १९३६ में हुआ, जब वामपंथी लेखकों ने प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना की लेकिन प्रेमचंद ने इसकी स्थापना से पहले ही सामाजिक यथार्थ की कहानियाँ लिखना आरंभ कर दी थी। निःसंदेह हम यह कह सकते हैं कि पहले लेखक प्रेमचंद ही थे, जिन्होंने सबसे पहले यथार्थवाद को अपनाया और प्रगतिशील आदर्शों को स्थापित किया। वे पहले गैर दलित लेखक भी हैं, जिनकी रचनाओं में हमें दलित समस्या का चित्रण मिलता है। प्रेमचंद पर डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर के दलित मुक्ति आंदोलन का बहुत असर पड़ा था। वे दलितों को हिन्दुओं से अलग करने के पक्ष में नहीं थे। इसलिए इनकी रचनाओं में दलित विमर्श उस रुप में नहीं है, जिस रुप में अम्बेडकर के दलित आंदोलन में था। वे सामाजिक बदलाव को महसूस करते हैं और

दलितों के प्रति सवर्णों के कठोर व्यवहार की निंदा भी करते हैं। कथाकार प्रेमचंद ने डॉ. अम्बेडकर के महाड़ चवदार तालाब सत्याग्रह से प्रेरित होकर 'ठाकुर का कुआँ' नामक कहानी लिखि थी जिसमें दलित की प्रताड़ना को दर्शाया गया है। सदगति कहानी में उन्होंने दलित के प्रति ब्राह्मणों के घृणित और अमानवीय व्यवहार को उजागर किया है। गोदान उपन्यास में हमें होरी की धार्मिक जड़ता दिखाई देती है। कुल मिलाकर गोदान उपन्यास, सदगति कहानी का अर्थ ब्राम्हण भक्ति से मुक्ति दलित मुक्ति है तो दलित्त विमर्श एक नई चेतना के साथ प्रेमचंद के रचना, कर्म में हमें मिलता है लेकिन उनकी 'कफन' कहानी में यह दलित विमर्श हो जाता है। कफन कहानी के पात्र घीसू और माधव अस्वाभिक से प्रतीत होते है। बुधिया दर्द से छटपटाती है और घीसू माधव आलू भूनकर खा रहे हैं। दोनों भी घर में जाकर बुधिया को नहीं देखते अंत में बुधिया दर्द से छटपटाकर मर जाती हैं। यह अस्वभाविक लगता है कि एक औरत दर्द से चीख रही है और आस पड़ोस की औरतें तक उसे देखने नहीं आती। प्रेमचंद ने घीसू और माधव के चरित्रों को जानबूझकर विकृत करने की परिस्थितियों का निर्माण किया हैं।

आधुनिक युग में प्रेमचंद, निराला, दिनकर अज्ञेय के साहित्य में दलित संवेदना की अनुभूति मिलती है। इनके दलित समाज की समस्याओं का चित्रण तो मिलता है। पर उनका समाधान नहीं है सही मायने में दलित साहित्य का प्रादुर्भाव दलित लेखकों के माध्यम से ही हुआ है। जिन्होंने दलित होने की पीडा को भोगा है। दलित साहित्य ने डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर के मूलमंत्र शिक्षित बनो, संगठित हो, संघर्ष करो की सही व्याख्या प्रदान कर दलितों में एक नई क्रान्ति पैदा की है।

अंग्रेजो का शासन भारतीय समाज के दलित–वर्ग के लिए मुक्ति का संदेश लेकर आया। अंग्रेजी के शासन से पहले का संपूर्ण भारतीय इतिहास इस बात का साक्षी रहा है कि दलितों के लिए ज्ञान प्राप्त करना वर्जित था और सवर्ण समाज ने हिंदू धर्म की आड में दलितों पर सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि सभी प्रकार के प्रतिबंध लाद दिए थे। प्रेमचंद का तो स्पष्ट कहना था कि राष्ट्रीयता की पहली शर्त वर्णव्यवस्था, ऊँच–नीच के भेद और धार्मिक पाखंड की जड़ खोदना है। हमारा स्वराज्य केवल विदेशी जुए से अपने को मुक्त करना नहीं है बल्कि उस सामाजिक जुए से भी, उस पाखंडी जुए से भी जो विदेशी शासन से कहीं अधिक घातक है। यही कारण था कि प्रेमचंद अपने समूचे साहित्यिक व वैचारिक चिंतन में दोहरी गुलामी अंग्रेजी साम्राज्य और वर्णाश्रयी देशी सत्ता का विमर्श रचते है।

प्रगतिशील साहित्य अपने मार्क्सवादी सरोकारों के कारण कहीं कहीं अति यथार्थवादी हो गया है जिस तरह वर्तमान दलित साहित्य अंबेडकरवादी सरोकारों के कारण कहीं कहीं आदर्शवादी हो गया है यह एक तथ्य है कि गरीबी में प्रतिभाएँ मर जाती हैं और गरीबी के विरुद्ध संघर्ष अपनी आर्थिक समस्याओं को हल किये बिना संभव नहीं है। प्रगतिशील साहित्य का दलित विमर्श वस्तुतः इसी अर्थवत्ता का हैं, परन्तु मुख्य समस्या यह है कि सारे गरीब मजदूर और दलित एक विशाल वर्गशक्ति कैसे बने? दलित साहित्य विचार की दृष्टि से अत्यन्त संपन्न साहित्य है और वर्गविहीन, जातिविहीन, शोषण मुक्त, न्यायकारक व्यवस्था के लिए लड़ता है।

कुल मिलाकर संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि प्रगतिशील आंदोलन और लेखन में सामाजिक गुलामी के प्रश्न की केन्द्रीयता दिखाई देती है। डॉ. रामविलास शर्मा की मार्क्सवादी वर्गीय दृष्टि और तुलसीदास के रास्ते समाजवाद की मंजिल का यह बेमेल आदर्श प्रगतिशील आन्दोलन की उस विरासत को समस्याग्रस्त करने वाला था जो सामाजिक गुलामी को विदेशी गुलामी से कमतर नहीं मानती थीं। परन्तु एक लंबे समय तक प्रगतिशील साहित्य ने यथार्थ चित्रण की वह समग्र दृष्टि अपनाई जिसमें किसान, दलित और स्त्री प्रश्नों के साथ भारतीय समाज की व्यापक चिंताए मौजूद थी। स्वाधीन भारत में जितने लोग साम्प्रदायिक हिंसा में मारे गये। उससे कई गुणा अधिक दलित विरोधी हिंसा के शिकार हुए। दलित साहित्य का जो बीजारोपण दलित संतो ने किया उसे महात्मा फुले, स्वामी अछुतानंद हरिहर ने अपनी ओजस्वी वाणी से अंकुरित करके आगे बढ़ाया अम्बेडकर के संघर्ष और मार्गदर्शन से प्रेरणा पाकर यह छठे दशक में महाराष्ट्र की भूमि पर नवजीवन पाकर प्रकट हुआ।

निष्कर्ष

प्रगतिशील आंदोलन और लेखन में सामाजिक गुलामी के प्रश्न की केन्द्रीयता दिखाई देती है। डॉ. रामविलास शर्मा की मार्क्सवादी वर्गीय दृष्टि और तुलसीदास के रास्ते समाजवाद की मंजिल का यह बेमेल आदर्श प्रगतिशील आन्दोलन की उस विरासत को समस्याग्रस्त करने वाला था जो सामाजिक गुलामी को विदेशी गुलामी से कमतर नहीं मानती थी। परन्तु एक लंबे समय तक प्रगतिशील साहित्य ने यथार्थ चित्रण की वह समग्र दृष्टि अपनाई जिसमें किसान, दलित और स्त्री प्रश्नों के साथ भारतीय समाज की व्यापक चिंताए मौजूद थी। स्वाधीन भारत में जितने लोग साम्प्रदायिक हिंसा में मारे गये। उससे कई गुणा अधिक दलित विरोधी हिंसा के शिकार हुए दलित साहित्य का जो बीजारोपण दलित संतो ने किया उसे महात्मा फुले, स्वामी अछुतानंद हरिहर ने अपनी ओजस्वी वाणी से अंकुरित किया हैं।

सन्दर्भ :–

1. पुत्रीसिंह कमला प्रसाद, राजेन्द्र शर्मा – भारतीय दलित साहित्य परिप्रेक्ष्य – पृ. ३००
2. डॉ. चन्द्रकुमार वरठे – दलित साहित्य आंदोलन – पृ. ७७

3. डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर – दलित साहित्य की हुंकार – पृ. ६६–७०
4. डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर – दलित साहित्य की हुंकार – पृ. ७१
5. कंवल भारती – दलित विमर्श की भूमिका – पृ. १०३
6. कंवल भारती – दलित विमर्श की भूमिका – पृ. १०४
7. प्रेमचंद – ठाकुर का कुआँ
8. प्रेमचंद – गोदान
9. प्रेमचंद – सदगति
10. प्रेमचंद – कफन

❐❐❐

2019-2020

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - IX Issue - I January - March - 2020

HINDI PART - II

Peer Reviewed Referred and UGC Listed Journal

Journal No. 40776

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

CONTENTS OF HINDI PART - II

अ.क्र.	शोधालेख एवं शोधकर्ता	पृष्ठ क्र.
१३	विज्ञापन के क्षेत्र **रंजना वामनराव बिरादार**	५५-५८
१४	जनसंचार माध्यम और हिंदी **प्रो. ए. जे. भेवले**	५९-६२
१५	बैंकिंग क्षेत्र में हिंदी की आवश्यकता एवं अनुप्रयोग **प्रो. डॉ. दीपक विनायकराव पवार**	६३-६७
१६	नव इलेक्ट्रॉनिक माध्यम और हिंदी **प्रा. डॉ. गजानन चव्हाण**	६८-७२
१७	संगणक और हिंदी **डॉ. शंकर रा. पजई**	७३-७५
१८	जनसंचार माध्यमों में कम्प्यूटर का प्रयोग **प्रो. डॉ. आबासाहेब राठोड**	७६-७९
१९	अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार और महत्व **डॉ. एस. एस. उप्पे**	८०-८१
२०	हिंन्दी प्रचार-प्रसार में जन संचार माध्यमों की भूमिका **डॉ. वंदन बापुराव जाधव**	८२-८४
२१	भूमण्डलीकरण के परिदृष्य में हिंदी अनुवाद क्षेत्र के बढ़ते कदम **डॉ. मोहन मुंजाभाऊ डमरे**	८५-८९
२२	हिंदी भाषा और रोजगार **प्रा. डॉ. विरनाथ पांडूरंग हुमनाबादे**	९०-९२
२३	जनसंचार माध्यमों की हिन्दी **प्रा. रऊफ इब्राहिम महंमद**	९३-९६
२४	जनसंचार माध्यमों की हिंदी **कविता दत्तु चव्हाण**	९७-१०१
२५	रोजगारोन्मुख हिंदी **शेख मोहसीन इब्राहीम**	१०२-१०४

VOLUME - IX, ISSUE - I - JANUARY - MARCH - 2020
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

१८. जनसंचार माध्यमों में कम्प्यूटर का प्रयोग

प्रो. डॉ. आबासाहेब राठोड
विभाग प्रमुख एवं शोध निर्देशक, कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, चौसाला, ता. जि. बीड ।

जनसंचार के लिए अंग्रेजी शब्द (Mass-Communication) है | जनसंचार शब्द दो शब्दों के मेल से बना है | जन और संचार | जन का अर्थ है जनता और संचार का अर्थ है फैलाना, किसी बात को आगे बढ़ाना हम किसी जानकारी या विचार को किसी भाषा के माध्यम से जनसमूह तक पहुँचाते है, तब उसे हम जनसंचार कहते है | जनसंचार में भाषा का अधिक महत्त्व होता है | भाषा के माध्यम से हम विचार को संप्रेषित करते है | जनसंचार में समाचार, रेडिओ, सिनेमा, टेलिविजन आदि को हम देख सकते हैं | जनसंचार माध्यम अंग्रेजी के पारिभाषिक शब्द Mass Media का हिंदी अनुवाद है | जनसंचार में विचार, भाव, सूचनाएँ जन माध्यम से मिलती है | मनुष्य समाजशील है | समाज परिवर्तनशील होने के कारण वह अपनी आदिम अवस्था से ही किसी न किसी साधन का प्रयोग करता रहा है | रेडिओ, टेलिविजन, मोबाईल के विश्व में संप्रेषण आसान हो गया है |

जनसंचार माध्यम की परिभाषा

राइट सी.आर. के अनुसार - जनसंचार विजातीय और अज्ञान जन से अप्रत्यक्ष संचार से जुड़ा है |

डेविड बार्ले के अनुसार - जनसंचार एक ही स्थान पर तैयार किए गए संचार के उस स्वरुप के रुप में परिभाषित किया जा सकता है | जो बिखरे हुए विशाल समुदाय तक पहूँचाने में समर्थ हो |

हिंदी भाषा क्षेत्रों में जनसंचार माध्यम के तीन रुप मिलते है | (१) लिखित जनसंचार माध्यम (२) श्रव्य जनसंचार माध्यम और (३) दृश्य-श्रव्य जनसंचार माध्यम | जनसंचार माध्यमों में पत्र-पत्रिकाएँ, किताबे, पैम्पलेट, रेडिओ, सिनेमा, टेलिविजन, नाटक, कम्प्यूटर आदि का प्रयोग होता है | जनसंचार माध्यम के लिखित रुप में दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, अर्धवार्षिक तथा वार्षिक पत्रिकाओं की गणना की जाती है | पत्र-पत्रिकाओं से जनसामान्य को खेल-कुद, बाजारभाव, स्वास्थ्य, कला, साहित्य, रोजगार आदि की भी जानकारी मिलती रहती है | पत्र-पत्रिकाओं में सभी उम्र के लोगों के लिए कुछ न कुछ जानकारी आवश्यक होती है | पत्र-पत्रिकाओं के अलावा इलेक्ट्रॉनिक मिडिया भी जनसंचार का माध्यम है | जिसमें रेडिओ, टेलिविजन, टेलिफोन, फॅक्स तथा इंटरनेट आदि के कारण व्यवसाय, स्टॉक मार्केट, शिक्षा, चिकित्सा आदि क्षेत्रों से जुड़ी अधुनातन सूचना जनमानस तक पहूँच रही है | इंटरनेट का आज घर घर में प्रयोग हो रहा है | इंटरनेट के माध्यम से लोग दूर रहकर भी (व्हीडिओ कॉन्फरन्सिंग द्वारा) आमने सामने बातचीत कर सकते है | टेलिविजन भी हिंदी की जनसंचार का सशक्त माध्यम है | भारत में अन्य भाषा की तुलना में हिंदी भाषी चॅनल अधिक देखे जाते है | हिंदी समाचार, हिंदी सिनेमा, हिंदी धारावाहिक तथा हिंदी में विज्ञापन लोग अधिक पसंद करते है |

आधुनिक जनसंचार माध्यमों में कम्प्यूटर का प्रयोग बढ रहा है | यांत्रिक संगणक कई सदियों से मौजूद थे किंतु आजकल अभिकलित्र (Programmable Machine) से है | अभिकलित्र से आशय है बीसवीं सदी के मध्य में विकसित हुए विद्यूत चालित अभिकलित्र | कम्प्यूटर जनसंचार का सबसे अच्छा माध्यम है | इनके कारण किसी भी संसाधन को साझा करने में

आसानी होती है | यह सभी प्रकार के फाईल को साझा करने का बेहतरीन डिवाईस है | कम्प्यूटर के कारण समय की बचत होती है |

आज का युग सूचना, संचार तथा विचार का युग है | सूचना के क्षेत्र में कम्प्यूटर का महत्त्व एक कल्पवृक्ष से कम नहीं है जिसमें व्यावसायिक, वाणिज्यिक, जनसंचार, शिक्षा, चिकित्सा आदि कई क्षेत्र में लाभ हुआ है | कम्प्यूटर और जनसंचार के क्षेत्र में आज जो नया विस्फोट हुआ है वह भाषा में भी एक मौन क्रांति का वाहक बनकर आया है | अभी तक भाषा को मनुष्य की आवश्यकताओं को पूरा करना पडता था लेकिन आज इसे न केवल मनुष्य की आवश्यकताओं को पूरा करना पड रहा है बल्कि मशीन और कम्प्यूटर की नित नई भाषाई माँगो को भी पूरा करना पड रहा है | विश्व में अब उसी भाषा को प्रधानता मिलेगी जिसका व्याकरण संगत होगा, जिसकी लिपि कम्प्यूटर की लिपि होगी |

यह एक संयोग की बात है कि कम्प्यूटर का विकास सबसे पहले ऐसे देशों में हुआ जिनकी भाषा अंग्रेजी थी | इस कारण रोमन लिपि छोडकर अन्य लिपिओं का विकास कम्प्यूटर पर देरी से हुआ | ऐसा कोई तकनीकी कारण नहीं है कि अंग्रेजी कम्प्यूटर के लिए आदर्श भाषा समझ ली जाए | कम्प्यूटर की दो संकेतो की अपनी एक स्वतंत्र गणितीय भाषा है और उसी में वह हमारी भाषाओं को ग्रहण करके अपने समस्त कार्य करता है | आज के दौर में भारतीय परिवेश में अधिकतर लोग अंग्रेजी भाषा में निपूण नहीं है | इसकारण हिंदी भाषा को लोग अधिक पसंद करते है | कम्प्यूटर का प्रयोग खासकर मुद्रित माध्यम, श्रव्य माध्यम और दृश्य-श्रव्य माध्यम में हो रहा है | इसे निम्नानुसार से स्पष्ट किया जा सकता है |

मुद्रित माध्यम और कम्प्यूटर

कम्प्यूटर के आने के पहले मुद्रित माध्यम के रुप में टाईप राईटर, छपाईयंत्र तथा इलेक्ट्रॉनिक टाईपराईटर का प्रयोग किया जाता था | तदुपरान्त कम्प्यूटर के प्रयोग से मुद्रण कला को नया रुप मिला | कम्प्यूटर के कारण मुद्रित कला आसान बना दी गयी है | इस संदर्भ में डॉ. महेंद्रसिंह राणा का मत है, "बीसवी सदी की अंतिम शताब्दियों में आधुनिक यांत्रिकी ने समाचार-पत्रों के मुद्रण, साज-सज्जा में आश्चर्यजनक परिवर्तन ला दिये थे, जो इक्कीसवी सदी में तकनीक की दृष्टि से और अधिक क्रांतिकारी सिद्ध हो रही है | आजकल भारत में भी अधिकतर समाचार पत्र कम्प्यूटर की सहायता से बहुरंगी चित्रों के साथ मुद्रित किये जाते है |"

भारत में आज सभी समाचार और पत्रिकाओं में कम्प्यूटर का प्रयोग तेजी से बढ रहा है | भारत जैसे बहुभाषी देश में भाषा में अनेकता होने के कारण मुद्रित माध्यम में समस्या बन सकती थी किंतु कम्प्यूटर के कारण किसी भी भाषा में टाईपिंग की जा सकती | समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं में कम्प्यूटर पर कार्य करने के लिए एक या अनेक व्यक्ति हो सकते है | कम्प्यूटर के सहयोग से विभिन्न पृष्ठों की सामग्री की बोर्ड के एक बटन दबाकर या माऊस से क्लिक करके प्रिंट निकाल सकते है | प्रिंटीग कार्य के लिए किसी भी कार्यालय में मायक्रोसॉफ्ट कंपनी के एम.एस. ऑफीस नाम के सॉफ्टवेअर प्रयोग में लाये जाते है | प्रिंट मीडिया में यूनीकोड के प्रवेश से, हिंदी से हिंदी टाईपिंग की कई परेशानियाँ समाप्त हो गई |

संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि मुद्रित माध्यम के कारण कम्प्यूटर प्रोग्राम के प्रयोग के कारण मानव समाज का काम और आसान कर दिया है | अक्षरों को छोटा, बडा करना, अक्षरों की शैली बदलना, अक्षरों को पहले ही रंग देकर देख लेना कि वह प्रिंट निकालने के बाद कैसे दिखेगा आदि बहुत सारी सुविधाएँ कम्प्यूटर के कारण आसान हो चुके है | इंटरनेट का प्रयोग

करकर समाचार को ईमेल द्वारा भेजा जा सकता है | इसके लिए जीमेल, रेडिफमेल, याहू और पोर्टल की मदद ली जाती है | भारतीय भाषाओं के लिए विकसित वेब दुनिया पोर्टल हिंदी के कारण मेल भेजने की सुविधा आसान हो गई है |

श्रव्य माध्यमों में कम्प्यूटर का प्रयोग

कम्प्यूटर का प्रयोग जनसंचार माध्यम के हर एक क्षेत्र में किया जा रहा है | श्रव्य माध्यम के अंतर्गत रेडिओ तथा संगीत सुनने के लिए बाजार में आनेवाले कई इलेक्ट्रॉनिक माध्यम आते है | रेडिओ का प्रयोग कम्प्युटर के द्वारा किया जा सकता है | इंटरनेट के माध्यम से रेडिओ को भी सूना जा सकता है | सही वेबसाईट की जानकारी होने से देशी रेडिओ के चॅनल्स के साथ साथ विदेशी चॅनल्स भी सूना जा सकता है | ऑपरेटिंग सिस्टम के कारण गीत सूनने लिए सॉफ्टवेअर दिये जाते है, उन्हीं के माध्यम से रेडिओ को भी सूना जा सकता है | रेडिओ की लोकप्रियता का यह बेहतरीन उदाहरण हो सकता है | जैसे उदाहरण के तौर पर मायक्रोसॉफ्ट ऑडियो व्हिडिओ आदि |

कम्प्यूटर डिजिटल संकेतो पर कार्य करता है | कम्प्यूटर के जरिए जनसंचार माध्यम में कई प्रयोग किये जा रहे है | टेलिफोन के द्वारा सीधे किसी भी व्यक्ति की बातचीत की जा सकती है | परंतु टेलिफोन की दरे समय के अनुसार बढ जाती है | जैसे लोकल कॉल, एसटीडी कॉल, रोमिंग कॉल, इंटरनॅशनल कॉल आदि | इंटरनेट प्रयोग के द्वारा यह कॉल के लगनेवाले रुपये कम कर सकते है | यह जनसंचार माध्यम में कम्प्यूटर का सबसे बेहतरीन उदाहरण है | केवल इंटरनेट कॉल करते समय सामने वाला व्यक्ति समयपर उपलब्ध होना चाहिए जिसे हम ऑनलाईन चॅटिंग या व्हिडिओ कॉन्फरन्सिंग कहते हैं |

रेडिओ के प्रयोग के कारण फिल्मी गीतों का प्रचलन बडा है | आज के युग में लोग फिल्मी गीत सुनने में आनंद मानते है | टेपरिकॉर्डर के माध्यम से भी गीत सूने जा सकते है | टेपरिकॉर्डर श्रव्य जनसंचार माध्यम का उदाहरण है | विभिन्न कंपनिओं के कॅसेट् के द्वारा फिल्मगीत सूना जा सकता है | आजकल तो फिल्म का प्रमोशन सीडी के द्वारा होता है | फिल्मों के व्हिडिओ आदि ऑडिओ सीडी बाजार में मिलते है | श्रव्य जनसंचार में कम्प्यूटर के माध्यम से किसी वक्ता का भाषण, विभिन्न वाद्यों का संगीत, गीत, कथन, प्रवचन आदि की रेकॉर्डिंग बातचीत सभी सूने जा सकते है |

संक्षेप में हम यह कह सकते है कि श्रव्य जनसंचार माध्यम में कम्प्यूटर ने मानव समाज की मदद ही की है | आज के दौर में उपकरणों से संप्रेषण सुविधा को और आसान बना दिया है | रेडिओ, संगीत, टेलिफोन, फिल्मगीत अब कम्प्यूटर पर भी उपलब्ध हो गये है |

दृश्य माध्यम और कम्प्यूटर

टेलिविजन, सिनेमा और विज्ञापन आदि जनसंचार के माध्यमों में कम्प्यूटर का प्रयोग बढ़ रहा है | कम्प्यूटर द्वारा व्हिडिओ इडिटिंग के लिए सॉफ्टवेअर मौजूद है | व्हिडिओ इडिटिंग में चित्रित किये गये दृश्यों को क्रमबद्ध करना, चित्रित दृश्यों में किसी विशिष्ट पात्र की आवाज निकालकर उसे किसी अन्य की आवाज देना, साथ ही साथ विशिष्ट चित्रण में कभी कभी पार्श्वगीत देना आदि के लिए सॉफ्टवेअर इंटरनेट पर उपलब्ध है | उदाहरण के तौर पर भूकंप आने के दृश्य व्हिडिओ में लेने के लिए भूकंप का आने का रास्ता देखने की आवश्यकता नहीं केवल सॉफ्टवेअर के उचित बटन को दबाकर मौजूद व्हिडिओं में भूकंप आने से जो प्रभाव पडता है, वह दिखाई देता है |

सिनेमा जगत में भी कम्प्यूटर का प्रयोग बढ रहा है | सिनेमा प्रदर्शित करने के लिए कम्प्यूटर द्वारा निर्मित सीडी का ही प्रयोग किया जाता है | सिनेमा का प्रचार प्रसार करने के लिए इस फिल्म का ट्रेलर, तथा चित्रित गानो को भी इंटरनेट पर डाल दिया जाता है | स्कुल, कॉलेज में पढ़नेवाले छात्रों द्वारा इंटरनेट से नये फिल्म के गीत डाऊनलोड करना आम बात है | इस तरह से सिनेमा निर्माण से लेकर प्रचार तक कम्प्यूटर मददगार साबित हो रहा है | विज्ञापन में भी कम्प्यूटर का प्रयोग दिन ब दिन बढ रहा है | किसी भी प्रकार के विज्ञापन में कम्प्यूटर का प्रयोग किया जाता है | कम्प्यूटर सॉफ्टवेअर की मदद से वस्तु का चित्र, वस्तु का शीर्षक, किंमत आदि क्रमबद्ध की जाती है | विज्ञापन में अक्षरों को रंग आकार एवं शैली में समाया जा सकता है | टेलिविजन के विज्ञापनों के लिए भी कम्प्यूटर का प्रयोग किया जाता है | जिसमें विज्ञापित वस्तु के नाम, तथा कंपनी का नाम आदि को शामिल करने के लिए सॉफ्टवेअर का प्रयोग किया जाता है |

निष्कर्ष रुप में हम यह कह सकते है कि संचार मानव जीवन का अभिन्न अंग है | मानव समाज बिना संचार के असंभव है | व्यक्ति अपने विचारों को दूसरे तक पहूँचाने के लिए किसी न किसी माध्यम का प्रयोग करता ही है | जब यह संचार माध्यम एक दो व्यक्ति तक सिमित न सहकर बडे पैमाने पर होता है, तब वह माध्यम जनसंचार कहलाता है | भाषा संचार माध्यम में वाहक होती है | भाषा के माध्यम से अपने विचारों को लिखित रुप में बनाया जा सकता है | भारत में जनसंचार माध्यम में समाचार पत्र-पत्रिकाएँ, किताबें, ग्रंथ साहित्य, उपन्यास, कविताएँ, लोकसाहित्य आदि दिखाई देते है | जनसंचार माध्यम के रुप में नाटक, सिनेमा, रेडिओ तथा टेलिविजन का भी व्यापक प्रयोग किया जाता है | रामलीला, कृष्णलीला तथा नौटंकी के रुप में नाटक विधा का पुराना इतिहास है | समय के साथ साथ नाटक विधा में अनेक बदलाव हुये जिसमें परिष्कृत रुप रेडिओनाट्य, टेलिविजननाट्य आदि को हम देखते है | आजादी के पहले नाटक ने अंग्रेजो की शोषक मानसिकता और आजादी के बाद लोकचेतना का प्रचार प्रसार किया |

सिनेमा के माध्यम से मनोरंजन होता है | भारत में प्रतिवर्ष जितने हिंदी सिनेमा बनते है, शायद ही किसी भाषा में किसी देश में बनते होंगे | भारत में हिंदी सिनेमा काफी लोकप्रिय रहा है | भारत में हिंदी सिनेमा ने कुरीतिओ, अंधविश्वास तथा रुढी परंपरा को तोडने का प्रयास किया है |

जनसंचार माध्यम के आधुनिक एवं पुरातन माध्यम में कम्प्यूटर का प्रयोग होता रहा है | विभिन्न सॉफ्टवेअर प्रयोगद्वारा कम्प्यूटर पर लोग हिंदी भाषा में चॅटिंग, ईमेल, ब्लॉग तथा वेब पेज आदि का प्रयोग करते है | कम्प्यूटर प्रयोग द्वारा हिंदी भाषा के जरिए जनसंचार की दिशाएँ काफी विकसित है | कम्प्यूटर पर हर कार्य अब हिंदी में भी संभव है जो अंग्रेजी एवं अन्य भाषाओं में किये जाते है| अंत में यह कहा जा सकता है कि टेलिविजन, सिनेमा और विज्ञापन क्षेत्र में कम्प्यूटर के बिना कार्य असंभव है | आज के वर्तमान दौर में कम्प्यूटर के कारण हिंदी साधक बनकर विराजमान होती हुयी दिखाई देती है |